NH Debate - 28

मैला उठाने की प्रथा बंद करने के प्रस्तावित कानून में क्या-क्या है?

सुनने में आ रहा है कि भारत सरकार मैला उठाने की प्रथा पर कानून ला रही है जो कि अति सराहनीय कदम हो सकता है अगर इसमें मैला उठाने के तमाम प्रारूपों को शामिल किया गया है तो|

हालाँकि हरयाणा में ऐसी सार्वजनिक मान्यता या समाज विशेष पे थोंपी जाने वाली कोई मैला प्रथा तो नहीं है और अधिकतर लोग निजी-स्तर पर अपना मैला खुद साफ़ करते रहे हैं| अमूनन मैला उठाने का नाम आते ही दिमाग में तस्वीर उभरती है गलियों-नालियों-लैटरिनों को साफ़ कर उस मैले को उठा कहीं दूर फेंकने वाले की| संदेह नहीं कि इसी को ही कानून के केंद्र में रखा गया होगा और बाकी के सब प्रारूपों को छोड़ दिया गया होगा| बाकी के प्रारूप जैसे कि:

पशुओं का मल-मूत्र-गोबर साफ़ करने वाले, जो कि हर पशुपालक के घर में पाये जाते हैं| इनमें हर तरह के काम करने वाले होते हैं, एक जो स्वेच्छा से करते हैं, दूसरे जो इसको रोजगार के लिए करते हैं, तीसरे जिनको और कुछ करना ही नहीं आता, चौथे जो पशुपालन से ही आजीविका कमाते हैं|

लेकिन मल तो मल है, चाहे जानवर का हो या इंसान का| इसलिए अगर मैला प्रथा पर कानून बनाने वाले, जानवरों का मैला उठाने वालों को भी इस कानून में शामिल करे और वही प्रावधान जो गलियों-नालियों का मैला उठाते हैं के लिए बनाये वही इनके लिए भी बनाये जाएँ तो तभी इस कानून का सही यथार्थ होगा|

इन दोनों तरह की मैला प्रथाओं को एक साथ एक ही कानून में लाने के कारण भी स्प्ष्ट और समदर्शी हैं| दोनों ही प्रथाएं सदियों से समाज में चली आ रही हैं| दोनों ही में कुछ वर्ग-विशेष सलिंप्त हैं| दोनों में मल ही उठाया जाता है| दोनों ही में बिमारियों के अंदेशे सामान हैं| दोनों ही सफाई की समस्या के मुद्दे हैं| दोनों ही मानवीय मजदूरी मांगते हैं|

इसलिए अगर कानून के प्रावधान में दस्ताने पहन के या मशीनों का प्रयोग करके मैला उठाने के प्रावधान आ रहे हैं तो वो पशुओं का मैला उठाने वालों के लिए भी आयें| जो पैसा-सुविधा या अधिकार सरकार गली-नालियों का मैला उठाने वालों को दे वो पशुओं का मैला उठाने वालों को भी दे|

अगर गली-नालियॉ साफ़ करने वाले समाज और वातावरण स्वच्छ रखने में मदद करते हैं तो पशुओं का मैला उठाने वालों का वातावरण भी स्वच्छ होना उतना ही जरूरी है क्योंकि वो पशुओं का मैला उठा के ना सिर्फ समाज और वातावरण को स्वच्छ रखते हैं अपितु गली-नाली साफ़ करने वालों से एक कदम और आगे जा के आपको दूध भी उपलब्ध करवाते हैं|

इसलिए इस कानून में जरूरी है कि उनकी सदियों से चली आ रही दशा का भी ख्याल रखा जाए|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 29/10/2013